भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों हेतु संगीत शिक्षा के विशिष्ट लाभ

सुजाता साहा*

संगीत शिक्षा के अनेक सकारात्मक पक्ष हैं, जिन्हें सामान्य शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में भी शामिल कर हम अनेक संबंधित विद्यार्थियों को लाभान्वित कर सकते हैं। भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों के संदर्भ में संगीत की ध्वनियों के आश्चर्यजनक और सुखद परिणाम देखे गये हैं। विभिन्न श्रेणियों के विशिष्ट विद्यार्थियों की शिक्षा में इन शोध-परिणामों का निसंदेह सार्थक उपयोग किया जा सकता है। प्रस्तुत प्रपत्र में कतिपय ऐसे ही शोध-अध्ययनों की विवेचना के उपरांत उन संभावनाओं पर विचार किया गया है, जिन्हें विशिष्ट शिक्षा के क्षेत्र में लागू कर हम भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने एवं उनकी विकास प्रक्रिया को अधिकाधिक तनावरहित एवं सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

संगीत विद्यार्थियों की कलात्मक दृष्टि को जाग्रत करने, उनके अवकाश के समय का रचनात्मक उपयोग करने तथा उन्हें बेहतर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की ओर ले जाने वाली उत्तम विधा है। इसका उपचारात्मक महत्त्व भी आज सर्वविदित है। सांगीतिक बुद्धि, बुद्धि के अन्य पहलुओं से घनिष्ठ रूप से संबंधित है **(गार्डनर, 2008)।**

अत: यह बुद्धि के समग्र विकास में सहायता करती है और अन्य विषयों की धारणा को भी बेहतर बनाती है। अनेक प्रयोगात्मक अध्ययनों में यह पाया गया है कि संगीत के विशिष्ट प्रयोग से मस्तिष्क गहरी एकाग्रता की दशा में आ जाता है। फलत: विद्यार्थियों की ऊर्जा, स्मरण-शक्ति एवं कक्षागत उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। बच्चों के लिए संगीत शिक्षा उन्हें उस शैक्षिक प्रक्रिया में निरंतर सहभागी होने का आनंददायक अनुभव देती है। संगीतमय मधुर ध्वनियाँ, सूक्ष्म आंदोलन और लय जब उद्दीपक के रूप में क्रियाशील होते हैं, दर्शक अथवा श्रोता की एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ जाग्रत होकर एक अपूर्व संवेगात्मक सुख प्राप्त करती हैं। गायन, वादन एवं

*एसोसिएट प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, एफ. आई. राजघाट, वाराणसी 221001, उत्तर प्रदेश

नृत्य की क्रिया तथा इनमें छोटे-छोटे सृजनात्मक प्रयोग करना विद्यार्थियों को एक उपलब्धि की अनुभूति देता है।

संगीत शिक्षा के माध्यम से भाषा सुधार द्रष्टव्य होता है **(ग्रोमको, 2005)**। प्राथमिक स्तर पर शाब्दिक स्मृति, शब्द भंडार तथा पठन-कौशल के विकास में संगीत का विशेष योगदान पाया गया है। गणितीय एवं स्थानिक क्षेत्रों में भी संगीत शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव देखा गया है **(पिरो एवं आर्टिज, 2009)**।

भिन्न-भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों की अंतर्निहित विशिष्ट योग्यताओं को उद्घाटित एवं विकसित करने की दिशा में संगीत एक सशक्त साधन हो सकता है। ऐसे विद्यार्थियों को अपने सामान्य विकास हेतु शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ध्वनिकेंद्रित विद्या होने के कारण गंभीर श्रवणबाधित बच्चों के अतिरिक्त अन्य सभी श्रेणियों के विशिष्ट बच्चे संगीत शिक्षा से लाभान्वित हो सकते हैं। इस दिशा में हुए विभिन्न अध्ययनों से आशाजनक निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

मंद विकास गति एवं शारीरिक विकलांगता से ग्रस्त विद्यार्थी

जिन बच्चों की विकास गति मंद होती है, उनके अशाब्दिक संप्रेषण तथा पेशीय कौशलों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु संगीत का उल्लेखनीय प्रभाव पाया गया है। पेशीय कौशलों में सुधार हेतु विभिन्न प्रकार के लय संबंधी वाद्यों पर अभ्यास उपयोगी होता है, क्योंकि उन पर उपयुक्त ध्वनि उत्पन्न करने हेतु विशेष प्रकार की हाथों की पकड़ एवं मुद्रा अपेक्षित होती है।

हार्डिंग एवं बालार्ड (1982) के अध्ययन में शारीरिक विकलांगता से पीड़ित बच्चों को तत्काल बोलने अथवा अनुक्रिया करने योग्य बनाने में संगीत को प्रभावपूर्ण पाया गया है।

अधिगम बाधित विद्यार्थी

वे अधिगम बाधित बच्चे, जिन्हें भाषा को समझने या उनका प्रयोग करने में समस्या है, उन विद्यार्थियों के श्रवण, चिंतन, वाचन एवं लेखन योग्यता पर भी संगीत शिक्षा का सकारात्मक असर देखा गया है।

ब्रेथवेट एवं सिगाफूस (1998) का निष्कर्ष था कि ऐसे बच्चों की शिक्षा में संगीत के प्रयोग से उनकी सम्प्रेषण-योग्यता में अतिशय सुधार हुआ, जिनमें सहज भाव-भंगिमाएँ, हस्त-संकेत, कंठ स्वर तथा शब्दों के प्रयोग में सुधार शामिल है।

कैसिडी (1992) ने पाया कि भाषा संबंधी कठिनाइयों से ग्रस्त विद्यार्थियों का सामान्य कक्षा के वातावरण में संगीत शिक्षा द्वारा प्रभावपूर्ण समावेशन किया जा सकता है। ऐसा देखा गया है कि विद्यालय पूर्व की आयु के ऐसे बच्चे, जिन्हें सम्प्रेषण संबंधी कठिनाइयाँ हैं, ये आधारभूत सांगीतिक कौशलों पर अपनी आयु के सामान्य बच्चों जैसा ही निष्पादन करते हैं। वे समूह में एक साथ गाना या वाद्य यंत्र बजाना पसंद करते हैं। इससे उनके पारस्परिक मैत्री भाव में वृद्धि हो सकती है तथा आपसी अंत:क्रिया बढ़ने से बेहतर सामाजिक कौशलों का भी विकास हो सकता है।

संवेगात्मक और व्यवहारपरक समस्याओं से पीड़ित विद्यार्थी

9 से 10 वर्ष की आयु के ऐसे विद्यार्थियों के व्यवहार और गणित की उपलब्धि पर 'पृष्ठभूमि

संगीत' के प्रभाव का अन्वेषण करते हुए **हॉलमैन एवं प्राइस (1998)** ने पाया कि शांतिपूर्ण 'पृष्ठभूमि संगीत' ने गणित की उपलब्धि में सार्थक वृद्धि की तथा नियमों के उल्लंघन सरीखे अवांछित व्यवहार में सार्थक कमी की। ऐसे संगीत का सर्वाधिक अनुकूल प्रभाव 'हाइपरएक्टिव' बच्चों पर पड़ा।

संगीत परंपरागत रूप से रोते हुए बच्चों को शांत कराने, उन्हें भोजन कराने या सुलाने का लोकप्रचलित तरीका रहा है। ऐसा देखा गया है कि संगीत-श्रवण से बच्चों की संज्ञानात्मक योग्यता बढ़ती है और वे प्रसन्नचित्त हो झूमते व गुनगुनाते हुए बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

मस्तिष्कीय समस्याओं से ग्रस्त विद्यार्थी

मस्तिष्क के संज्ञानात्मक, श्रवण संबंधी एवं सांगीतिक प्रक्रियाओं में घनिष्ठ संबंध है। इसी कारणवश मस्तिष्क आघात के उपरांत संगीत का सफल उपयोग मस्तिष्क को पूर्वावस्था में लाने हेतु भी किया गया है **(जारकामो, 2011)**।

एडगर्टन (1994) ने 'ऑटिज़्म' की समस्या से पीड़ित बच्चों पर संगीतोप्रचार से पाया कि उनकी आत्मकेंद्रिता में कमी आई तथा उनका सम्प्रेषण पूर्व से बेहतर हुआ। संगीत की सृजनात्मक प्रक्रिया, जिसे सांगीतिक शब्दावली से 'बढ़त' या 'इम्प्रूवाइज़ेशन' कहते हैं, का भी ऐसे बच्चों को अभ्यास कराने पर वांछित प्रभाव देखा गया है।

मानसिक-मंदन से पीड़ित विद्यार्थी

मनसिक-मंदन से पीड़ित बच्चों में संगीत के उपयोग से सकारात्मक आत्म-सम्प्रत्यय का विकास किया जा सकता है। उनके तनाव और संवेगात्मक दबावों को कम करने में सरल संगीत का श्रवण और सरल प्रशिक्षण औषधि की भाँति कार्य करता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थी

सामान्य अनुभव से भी यह ज्ञात है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की श्रवण संबंधी संवेदना सामान्य अथवा विशिष्ट विद्यार्थियों की तुलना में अत्यधिक विकसित होती है। वे ज़रा सी आहट से व्यक्ति विशेष की पहचान कर लेते हैं। संगीत विशिष्ट ध्वनियों पर आधारित विद्या है। उच्चस्तरीय गणितीय गणना करने या विज्ञान जैसे विषय का उच्चतर अध्ययन करने में ऐसे विद्यार्थियों को कठिनाई होना स्वाभाविक है। किन्तु ये गायन अथवा वादन में विशिष्ट योग्यता प्रदर्शित कर सकते हैं।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के विशिष्ट विद्यालयों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनकी तत्संबंधी प्रतिभा देखते ही बनती है। जन्मांध भक्त कवि सूरदास अच्छे गायक भी थे। मशहूर फिल्म संगीतकार रवीन्द्र जैन की प्रतिभा से हम सुपरिचित हैं। ऐसे और भी उदाहरण हमें इस दिशा में चिंतन करने को प्रेरित करते हैं। हमारे देश में कुछ विद्यालय इसी उद्देश्य से कार्य कर रहे हैं। फगवाड़ा (पंजाब) के आवासीय संगीत विद्यालय में 80 दृष्टिबाधित विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

वाक्बाधित विद्यार्थी

वाक् क्षमता में सुधार की प्रक्रिया में गायन संबंधी विशेष प्रयोगों से कार्यात्मक सम्प्रेषण का विकास किया जा सकता है। स्पीच थेरेपी के साथ ही विभिन्न लंबाई के गाने सिखाकर ऐसे विद्यार्थियों के बोलने की अवधि बढ़ाई जा सकती है। साथ ही लय का प्रयोग बोलने की गति को नियंत्रित

करने, बोधगम्यता बढ़ाने तथा समय के मापन हेतु किया जा सकता है। तबले या ढोलक जैसे अवनद्ध वाद्यों अथवा मजीरे या झाँझ जैसे घन वाद्यों पर निश्चित समयांतराल पर निरंतर एक धीमी लय से आघात कर वाक्बाधित विद्यार्थी को अपनी वाणी का तारतम्य उस आघात की ध्वनि से स्थापित करने को कहा जा सकता है।

श्रवणबाधित विद्यार्थी

संगीत के प्रशिक्षण से श्रवण-क्षमता का भी एक हद तक विकास संभव है। किन्तु श्रवण-बाधिता हल्की होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी श्रवण-यंत्रों की सहायता से ध्वनियाँ सुन सकें। **गैब एवं अन्य (2005)** ने पाया कि संगीत के अनुभव एवं प्रशिक्षण से मस्तिष्क की त्वरित गति से परिवर्तित होने वाली ध्वनियों की गुणवत्ता में अंतर करने की क्षमता में सुधार होता है। यह कालांतर में सफल वाचन करने में सहायक होता है।

विशिष्ट शैक्षिक निहितार्थ

उपर्युक्त विवेचन से भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों हेतु संगीत शिक्षा की कुछ संभावनाएँ और उभर कर आती हैं, जिनका अनुप्रयोग कर हम सामान्य विकास की ओर अग्रसर करने में उनकी सहायता कर सकते हैं

- कठिन विषयों का शिक्षण करते हुए विशिष्ट कक्षाओं में हल्के स्वर में शांतिपूर्ण पृष्ठभूमि संगीत का उपयोग किया जा सकता है। विशेष रूप से रिकॉर्डेड वाद्य संगीत का इस उद्देश्य से प्रयोग किया जाना उपयुक्त होगा। वाद्यों की सांगीतिक ध्वनियों के माध्यम से व्यक्ति में सक्रियता का संचार होता है। शब्दों की अनुपस्थिति में भी वाद्य प्रतीकात्मक रूप से स्वर एवं लय के माध्यम से रस, भावों एवं संवेगों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति करते हैं **(कौशल, 2011)**। वाद्यों के पृष्ठभूमि संगीत से संबंधित विषय की धारणा बेहतर हो सकती है। शब्द न होने के कारण विद्यार्थियों का ध्यान भी विचलित होने की आशंका नहीं रहती।
- समावेशित (इन्क्लूसिव) परिवेश में सामाजिक अंत:क्रिया बढ़ाने हेतु संगीत संबंधी मनोरंजक खेलों का आयोजन किया जा सकता है। अन्त्याक्षरी या एक पक्ष द्वारा किसी लोकप्रिय गीत की एक पंक्ति गाना और दूसरे पक्ष द्वारा पूरा करना ऐसे ही खेलों के उदाहरण हैं।
- समूह गान या वृन्द-वादन के ऐसे अवसर प्रदान करना भी इसी दिशा में एक और प्रयास हो सकता है, जिससे सामान्य विद्यार्थियों के साथ ही विशिष्ट विद्यार्थियों का भी योगदान हो। ऐसे सामूहिक कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को एक ही निर्देशक के निर्देशों का पालन करना होता है। निर्देशक से दृष्टि संपर्क बनाए रखने से उनकी एकाग्रता बढ़ती है तथा उनकी अतिरिक्त क्रियाशीलता पर नियंत्रण होता है।
- साथ गाने या बजाने की प्रक्रिया से एक ही समूह का सदस्य होने या 'हम' की भावना का विकास होता है। शर्मीले या एकाकी विद्यार्थी भी इस प्रकार की गतिविधियों में खुशी से भाग लेते हैं।
- हाथों की मांसपेशियों की कमज़ोरी से ग्रस्त बच्चों का अन्य शारीरिक व्यायाम के साथ ही ड्रम, ढोलक, तबला, मंजीरा, झाँझ या करताल जैसे वाद्यों पर भी अभ्यास करने के अवसर दिए जा सकते हैं।

- वाक् बाधित विद्यार्थियों के मुख की माँसपेशियों की शक्ति बढ़ाने तथा साँस के बेहतर नियंत्रण हेतु सीटी, पिच पाइप, अथवा माउथ आर्गन, बाँसुरी जैसे सुषिर वाद्यों का खेल-खेल में इस्तेमाल हो सकता है।
- जिन विद्यार्थियों की सम्प्रेषण क्षमता सीमित है, उन्हें सप्तक के स्वरों तथा संगीतमय मधुर ध्वनियों की पुनरावृत्ति का पाठ दिया जा सकता है। गायन के साथ-साथ उपयुक्त भाव-भंगिमाओं के अभ्यास द्वारा वे अपने अशाब्दिक सम्प्रेषण को बेहतर बना सकते हैं।
- गायन अथवा वादन का प्रशिक्षण देते हुए इस प्रक्रिया में ऐसे सक्षम बच्चों को उनकी सृजनात्मकता का उपयोग करने हेतु तत्संबंधी उदाहरण देकर प्रेरित किया जा सकता है। जैसे-बंदिश अथवा गीत की एक ही पंक्ति को विविध प्रकार से गाना या बजाना, गायन अथवा वादन का विस्तार करते हुए स्वर-समूहों की धीमी, सामान्य एवं द्रुत लय में त्वरित मौलिक रचना करने के प्रयास को प्रोत्साहित करना इत्यादि। ऐसे प्रयास की सफलता से भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों को एक विशेष उपलब्धि का गर्वपूर्ण अहसास होगा और उनमें आगे सीखने का उत्साह बढ़ेगा।
- संगीत अथवा अन्य विषयों के कठिन अभ्यास के उपरान्त शारीरिक, मानसिक शिथिलीकरण और विश्रांति के लिए संगीत के रुचिकर रिकॉर्डों का चयन एवं प्रयोग किया जा सकता है।

निष्कर्ष

संगीत शिक्षा का सर्वाधिक सशक्त पक्ष उसके विविध रूपों के प्रति अधिकांश विद्यार्थियों की रुचि होना है। भिन्न योग्यता के विद्यार्थियों का सामान्य विकास शिक्षाविदों के समक्ष अभी भी एक चुनौती है। विशिष्ट पाठ्यक्रम में संगीत शिक्षा की प्राचीन विद्या का समुचित और यथायोग्य समावेश निश्चय ही ऐसे विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

संदर्भ

एडगर्टन, सी. एल. 1994. द इफेक्ट ऑफ इम्प्रूवाइजेशनल म्यूज़िक थिरैपी ऑन द कम्यूनिकेटिव बिहेवियर ऑफ ऑटिस्टिक चिल्ड्रेन, *जर्नल ऑफ म्यूज़िक थिरैपी,* 31, 31-62.

कैसिडी, जे. डब्ल्यू. 1992. कम्यूनिकेशन डिसॉर्डर्स-इफेक्ट ऑन चिल्ड्रेन्स एबिलिटी टू लेबल म्यूज़िक कैरेक्टरिस्टिक्स, *जर्नल ऑफ म्यूज़िक थिरैपी,* 29(2), 113-114.

कौशल, एल. के. 2011. स्वर वाद्यों द्वारा रसाभिव्यक्ति-एक अवलोकन, *संगीत,* 77(7).

गैब, एन. टालाल, पी. के. एच; लक्ष्मीनायवक, के. आर्ची, जे. जे. ग्लोवर, जी. एच. एवं गैब्रिएली, जे. डी. ई. 2005. *न्यूरल कोरिलेट्स ऑफ रैपिड स्पेक्ट्रोटेम्पोरल प्रोसेसिंग इन म्यूज़िशियंस एंड नॉन म्यूज़िशियंस,* एनल्स ऑफ़ न्यूयार्क एकेडमी ऑफ साइंसेस, 1060, 82-88.

गार्डनर, एच. 2008. *मल्टीपल इंटेलिजेंसेस एंड एजूयुकेशन,* www.infed.orgèkthinkers gardner.h... , 20 फरवरी.

ग्रोमको, जे. 2005. द *इफेक्ट ऑफ म्यूज़िक इंस्ट्रक्शन ऑन फोनेमिक अवेयरनेस इन बिगिनिंग रीडर्स.* जर्नल ऑफ कॉलेज रीडिंग एंड लर्निंग, 53(3), 199-209.

जारकामो, टी. 2011. *म्यूज़िक इन रिकवरिंग ब्रेन,* डिजर्टेशन, फैकल्टी ऑफ बिहेवियरल साइंसेस, यूनिवर्सिटी ऑफ हेलसिंकी.

पिरो, जे. एम. एवं आर्टिज, सी. 2009. द *इफेक्ट ऑफ पियानो लेसंस ऑन द वोकेबलरी एंड वर्बल सिक्वेंसिंग स्किल्स ऑफ़ प्राइमरी ग्रेड स्ट्यूडेन्ट्स,* साइकॉलॉजी ऑफ म्यूज़िक, 16 मार्च, 2009

ब्रेथवेट एम. एवं सिगाफूस जे. 1998. *इफेक्ट ऑफ सोशल वर्सेस म्यूजिकल एंटीसिडेन्ट्स ऑन कम्यूनिकेशन रिस्पांसिवनेस इन फाइव चिल्ड्रेन विद डेवलपमेन्टल डिसेबिलिटीज़.* जर्नल ऑफ म्यूज़िक थिरैपी, 35(2), 88-104.

हार्डिंग, सी. एवं के. डी., बालार्ड. 1982. द *इफैक्टिवनेस ऑफ म्यूज़िक एज़ अ स्टिम्युलस एंड एज़ अ कंटिजेंट रिवार्ड इन प्रोमोटिंग द स्पॉन्टेनियस स्पीच ऑफ़ थ्री फिज़िकली हैन्डीकैप्ड प्रीस्कूलर्स,* जर्नल ऑफ म्यूज़िक थिरैपी, 19(2), 86-101.

हॉलमैन एंड प्राइस 1998. रिपोर्टेड इन हालाम, एस. 2002. द इफैक्ट ऑफ बैकग्राउंड म्यूज़िक ऑन स्टडिंग, *क्रिटिकल लिंक्स–लर्निंग इन द आर्टस एंड स्टूडेंट्स एकेडमिक एंड सोशल डवलपमेंट*, आर्टस एजुकेशन पार्टनरशिप–वाशिंगटन डी. सी.